

नाम जप की विधि

वहाँ एक दिन सत्संग में किसी सेवक ने हाथ जोड़कर पूछा-निर्मल नाथ ! नाम जपते-जपते मन उसके आनन्द में डूब जाता है, फिर लीला-समाज में प्रवेश नहीं करता ।

उत्तर-नाम जप के समय धाम, रूप, लीला और सेवा का चिन्तन होने से ही सच्चे भगवद्-रस का उदय होता है । इसके बिना जो नाम जप होगा उसमें वृत्तियों की शिथिलता मात्र होगी, द्रवता नहीं होगी । वह मिट्टी के उस ढेले के समान होगी जो गीला तो है पर पिघलकर किसी की ओर बहता नहीं है । तदा-कारता तब होती है, जब चित्तवृत्ति पिघलकर इष्टदेव के साँचे में ढलती है । केवल नाम जपके समय जो आनन्द होता है वह संसार की चिन्ता और दुःख का भार उतर जाने का आनन्द है । इस भार युक्त वृत्ति पर जब विरहताप की व्याकुलता की आँच लगती है तब पिघलकर वह इष्टदेव के आकार के साँचे में ढलती है और लीला-रस का अनुभव होने लगता है । इसलिए नाम-जप से यदि चरित्र-समाज का अनुभव न होता हो तो बीच-बीच में लीला के पद गा-गाकर लीला का भाव जाग्रत करना चाहिये । नामजप से विक्षेप की निवृत्ति और पद से लीला का आविर्भाव होता है, फिर विक्षेप आवे तो नाम जप करो । तप से मन एकाग्र हो ता फिर लीला का चिन्तन करो ।

यह भगवान् का चिन्तन घण्टे-दो-घण्टे की ड्यूटी अथवा

धर्मपालन नहीं है । इसके लिए जीवन का सारा समय ही अर्पित करना पड़ता है । चलते-फिरते, काम-धन्धा करते भी हृदय में महा पुरुषों की वाणी के अर्थ का विचार करता रहे । उनमें अनेक भाव सूझें । उन भावों से मिलती जुलती रसिकजनों की वाणीयों को ढूँढकर मिलान करे । उनमें लीला के जो सुन्दर सुन्दर भाव हैं उनका अनुभव करे । इससे संसार के संकल्प मिटेंगे और भगवान् के प्रति मन बुद्धि का अर्पण होगा । यह मनोरम बड़े रसिक हैं । चस्का लग जाने पर ये नये नये रस घोलते रहते हैं ।

प्रश्न-मालिक ! भक्त को नाम जप कैसे करना चाहिये ?

उत्तर-भक्त दो तरह के होते हैं-एक विरही और दूसरे प्रभु से मिले हुये । पहले भक्त भगवान् का नाम इस तरह जपते हैं, जैसे माता अपने परदेश गये इकलौते पुत्र को पुकारती है अथवा मरुस्थल में प्यास से तड़फड़ाता प्राणी जब तक श्वास चलता है, होश रहता है, तब तक 'पानी पानी' स्वाभाविक विकलता से पुकारता रहता है । उसे यह ख्यान नहीं रहता कि हमें पानी-पानी कहने से कोई पुण्य होगा या पानी खुद मेरे पास आ जायेगा । वह तो अपनी भीतरी माँग अपनी ज़रूरत भर प्रगट करता है ।

मिले हुए भक्त इस प्रकार नाम-जप करते हैं जैसे किसी मनचले बालक को पर्याप्त रसगुल्ले मिल गये हों और वह खाता भी जाता हो और 'वाह रसगुला' 'बड़ा आनन्द' 'अमृत है, अमृत है' ऐसे स्वाद लेता और देता जाता हो । वह अपने

भोलेपन, बचपन, मजा और उसके प्रदर्शन से अपने प्रभु को
रिझाता है और उसकी रीझ देखकर नये उत्साह नये जोश,
नई उमंग और नई चोप से--और-और गहरे गोते लगाना, और
रस विलास प्रकट करना अपने आनन्द से सबको आनन्दित
कर देना ऐसा नाम जप करता है ।